

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना  
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत् २४१

मनसि स्वस्य दीनता भावनीया. सर्वाधिष्ठानेषु सर्वलोकेषु च यत्र भगवद्बुद्धिः भवति बुद्धिश्च कर्तव्या. अन्यकर्तृकापमानेऽपि न अहंकारं कुर्यात्. भगवतः सकाशान मानापेक्षां च वर्जयेत्.

एतत् सिद्ध्यर्थम् उपायम् आह सर्वथा तदुणालापं इति.

**सर्वथा तदुणालापं नामोच्चारणमेव वा  
सभायामपि कुर्वीत निर्भयो निःस्पृहस् ततः**

२४२

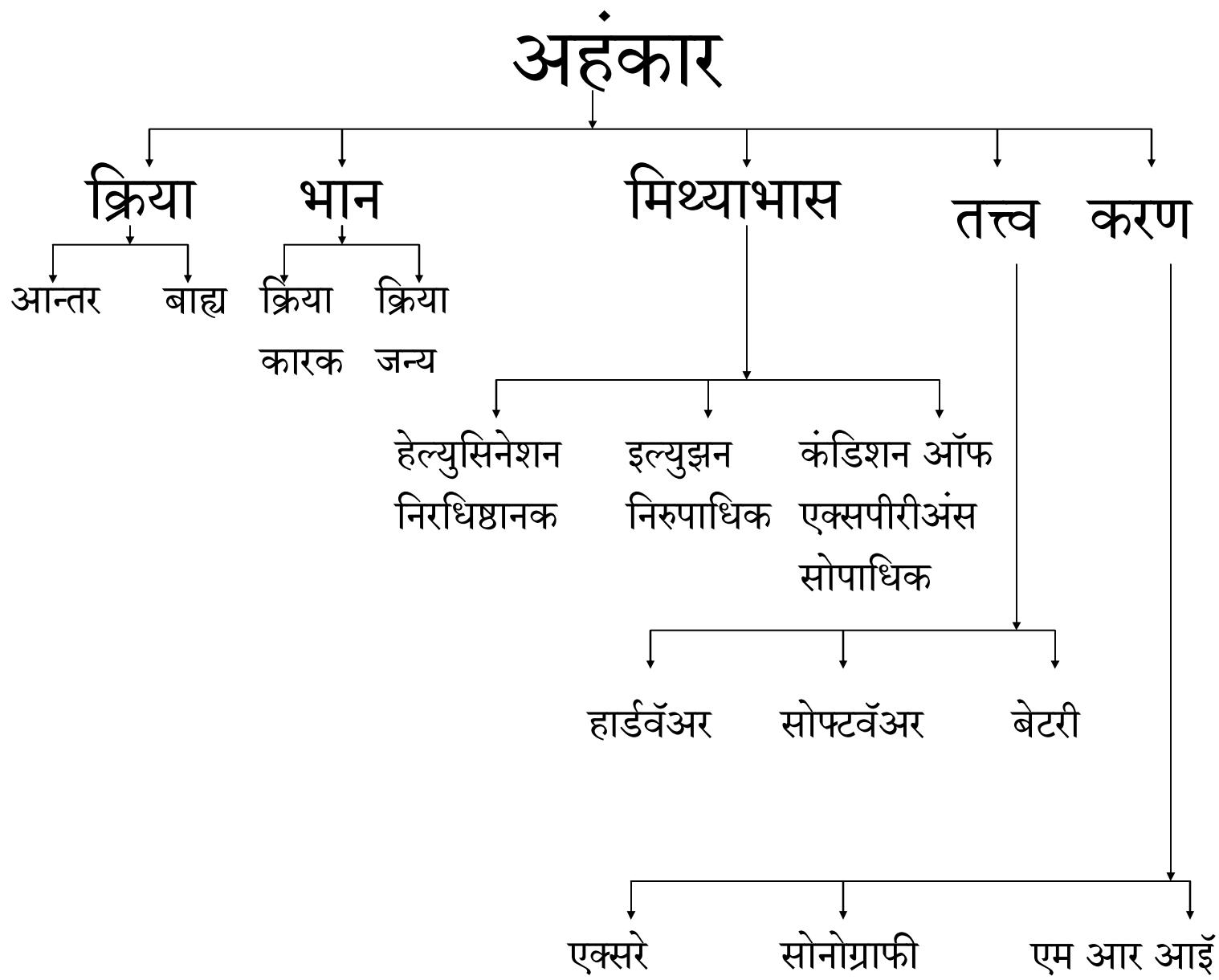
सर्वथा सर्वत्र भगवदुत्कर्षवर्णने पूर्वोक्तं सिद्ध्यति. दैत्यानां सन्निधानेऽपि निर्भयः फलाभावाय निस्पृहः ततः इति

१. हकीकत / कहानी

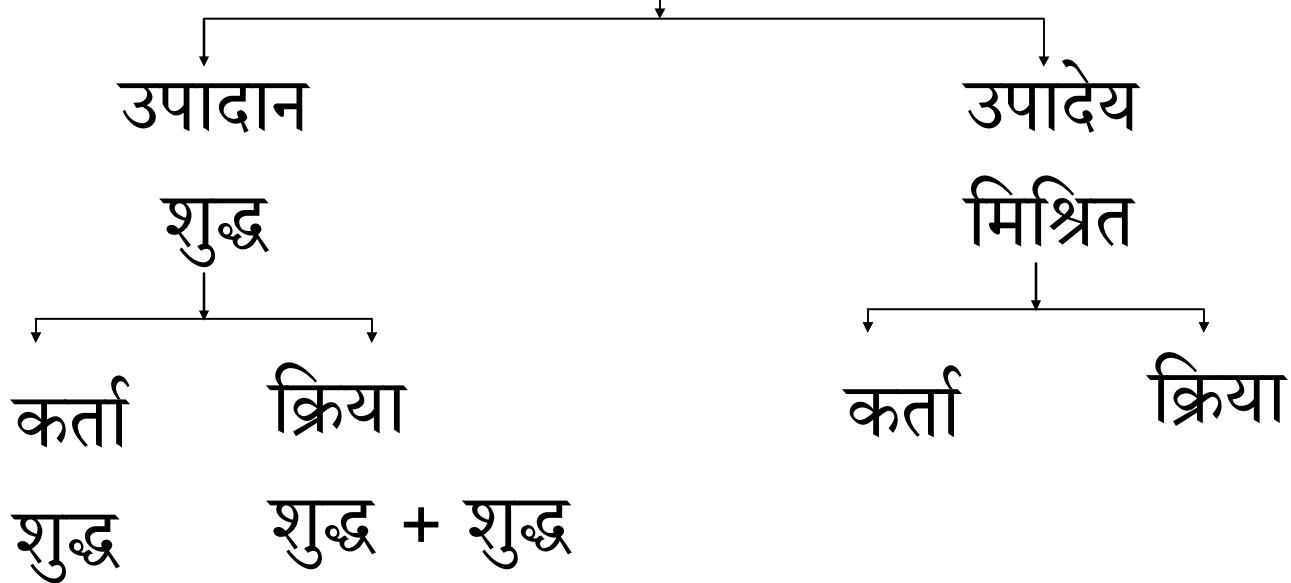
२. हकीकत + कहानी

३.

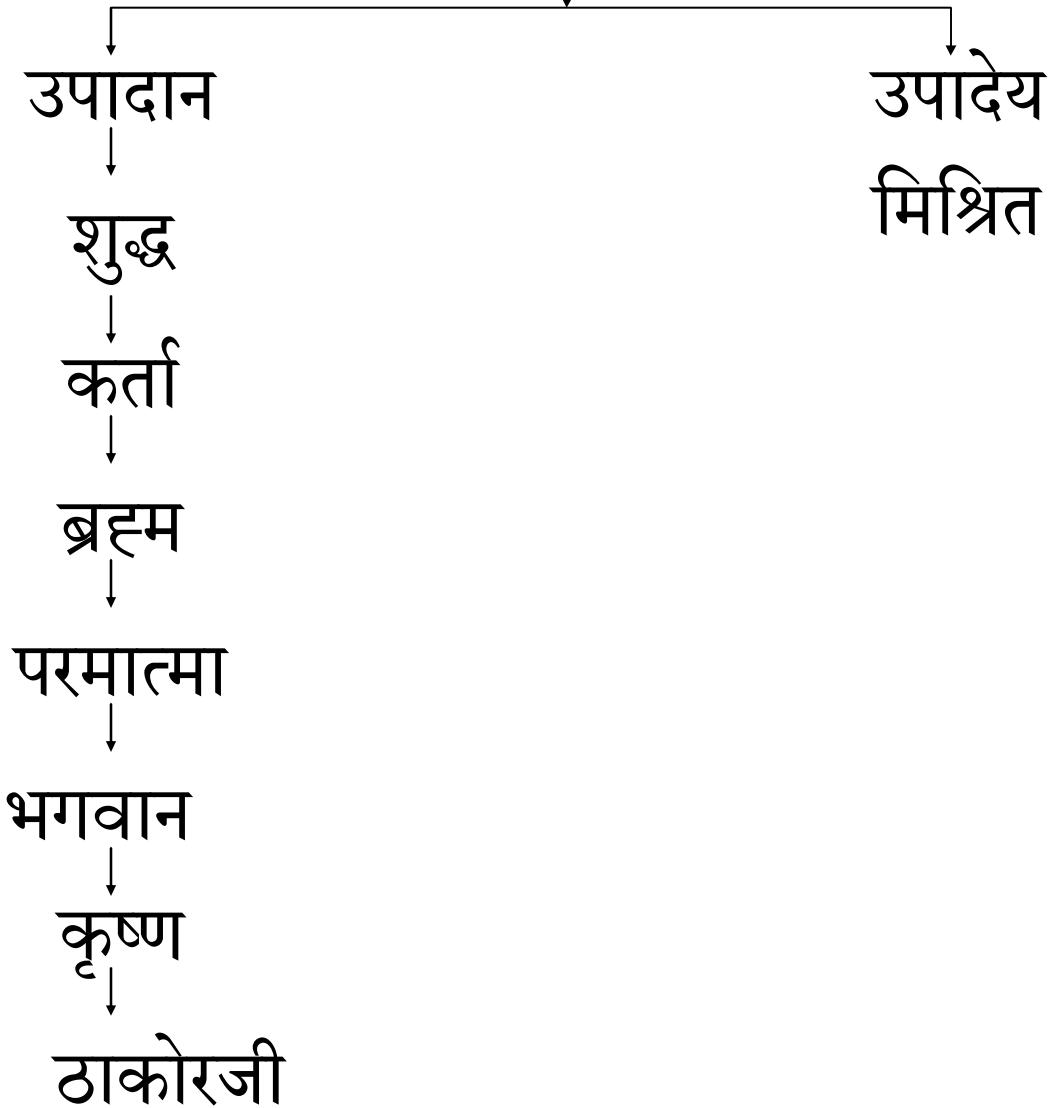


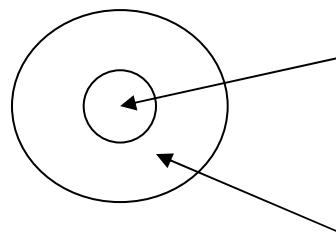


# अहंकार



# अहंकार

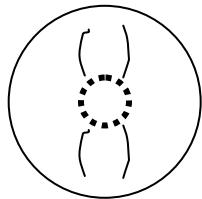




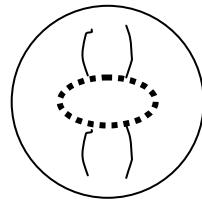
Nucleus

Cytoplasm

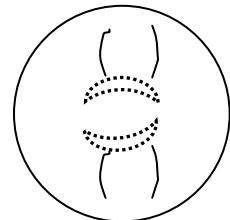
एकाकी न रमते  
PROPHASE



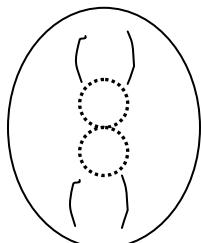
द्वितीयम एच्छत  
METAPHASE



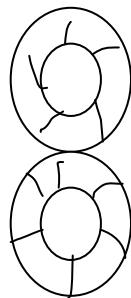
आत्मना द्वैधा पातयत  
ANAPHASE



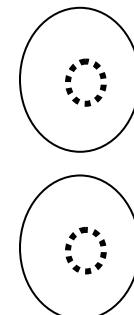
परिश्च  
EARLY  
TELOPHASE



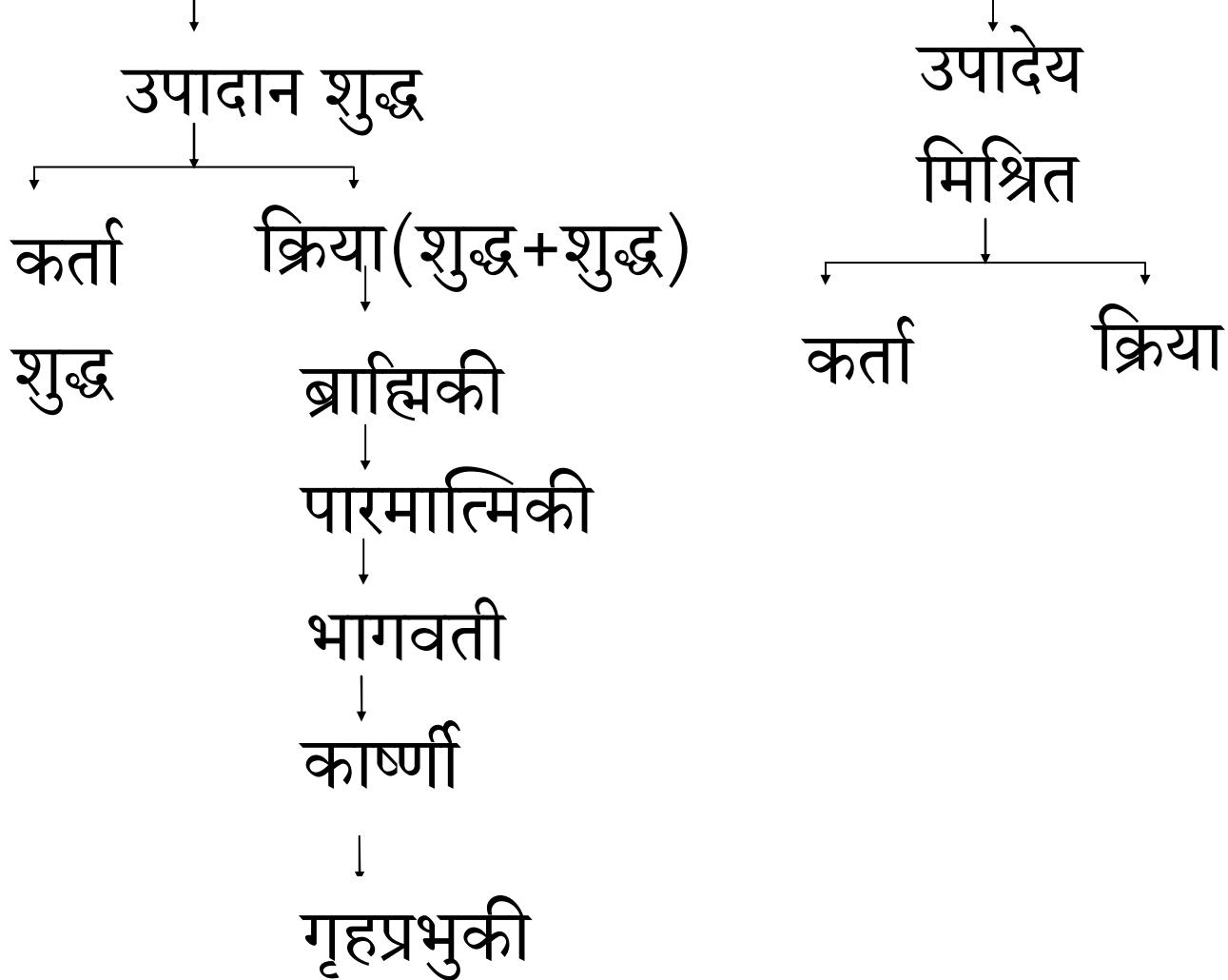
पत्ति  
LATE  
TELOPHASE



अभवताम  
TELOPHASE

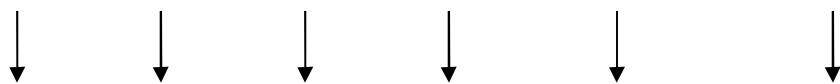


# अहंकार



गुण  
भागवती = ऐ वी य श्री ज्ञा वै

अहंक्रिया



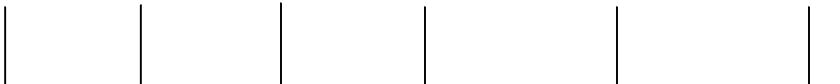
क्रिया=दैन्य दुःख हीनता जन्मादि अहं विषयराग



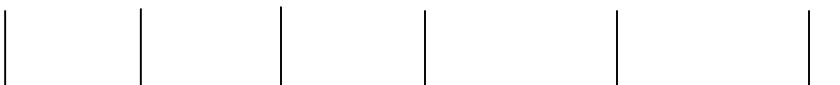
दोष= मद मात्सर्य लोभ मोह क्रोध काम



विद्या=शरणा. योग तप भक्ति सांख्य वैराग्य



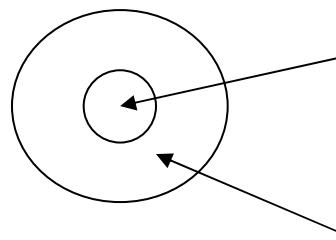
पुष्टि=शरणा. निरोध सेवा समर्पण सर्वात्मभाव भक्ति



गृहठाकुर = स्वगृहे यथा तनु सर्वस्व भजनीय कृष्णसेवा

अहंक्रिया लब्धो- वित्तजा सर्वस्व

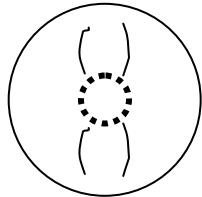
पचार



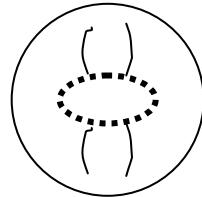
Nucleus

Cytoplasm

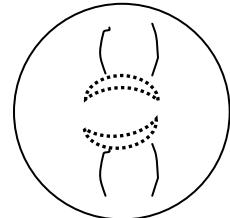
एकाकी न रमते  
PROPHASE



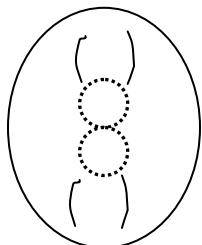
द्वितीयम एच्छत  
METAPHASE



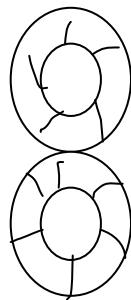
आत्मना द्वैधा पातयत  
ANAPHASE



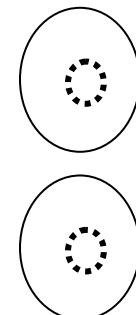
परिश्च  
EARLY  
TELOPHASE



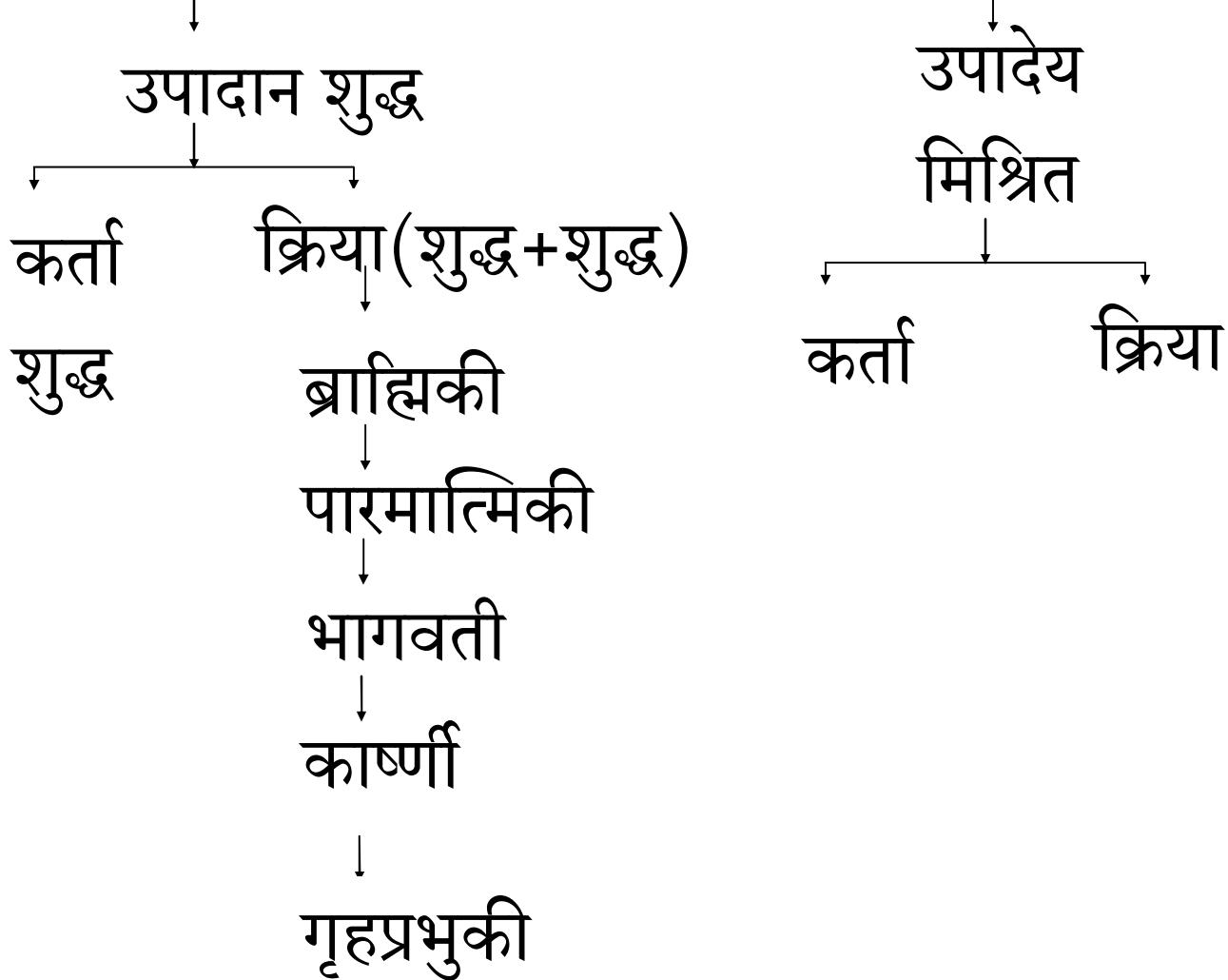
पत्ति  
LATE  
TELOPHASE



अभवताम  
TELOPHASE

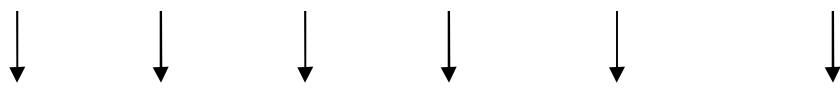


# अहंकार



गुण  
भागवती = ऐ वी य श्री ज्ञा वै

अहंक्रिया



क्रिया=दैन्य दुःख हीनता जन्मादि अहं विषयराग

दोष= मद मात्सर्य लोभ मोह क्रोध काम

विद्या=शरणा. योग तप भक्ति सांख्य वैराग्य

पुष्टि=शरणा. निरोध सेवा समर्पण सर्वात्मभाव भक्ति

गृहठाकुर = स्वगृहे यथा तनु सर्वस्व भजनीय कृष्णसेवा  
अहंक्रिया लब्धो- वित्तजा सर्वस्व पचार

कुतो अहम्?

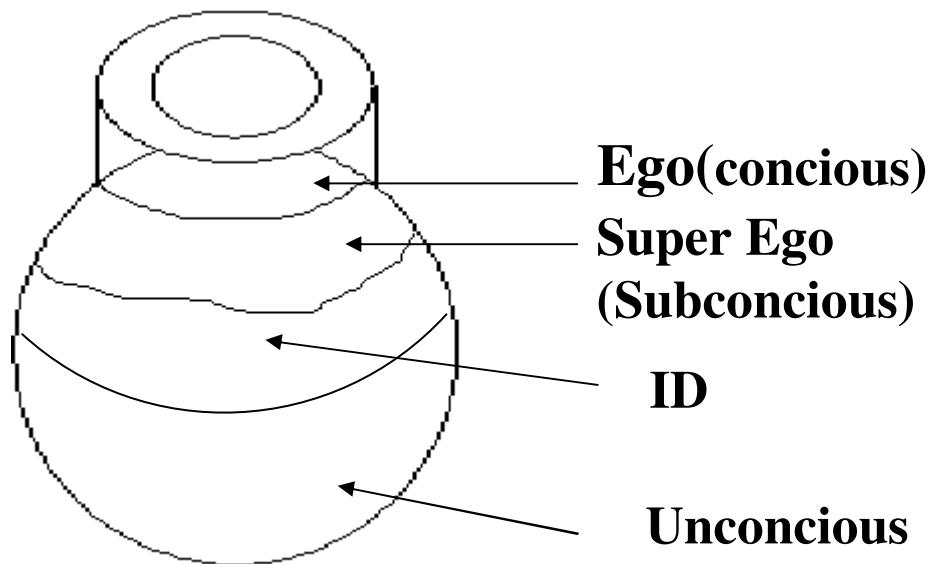
आत्माभिव्यक्ति  
आत्मतुष्टि

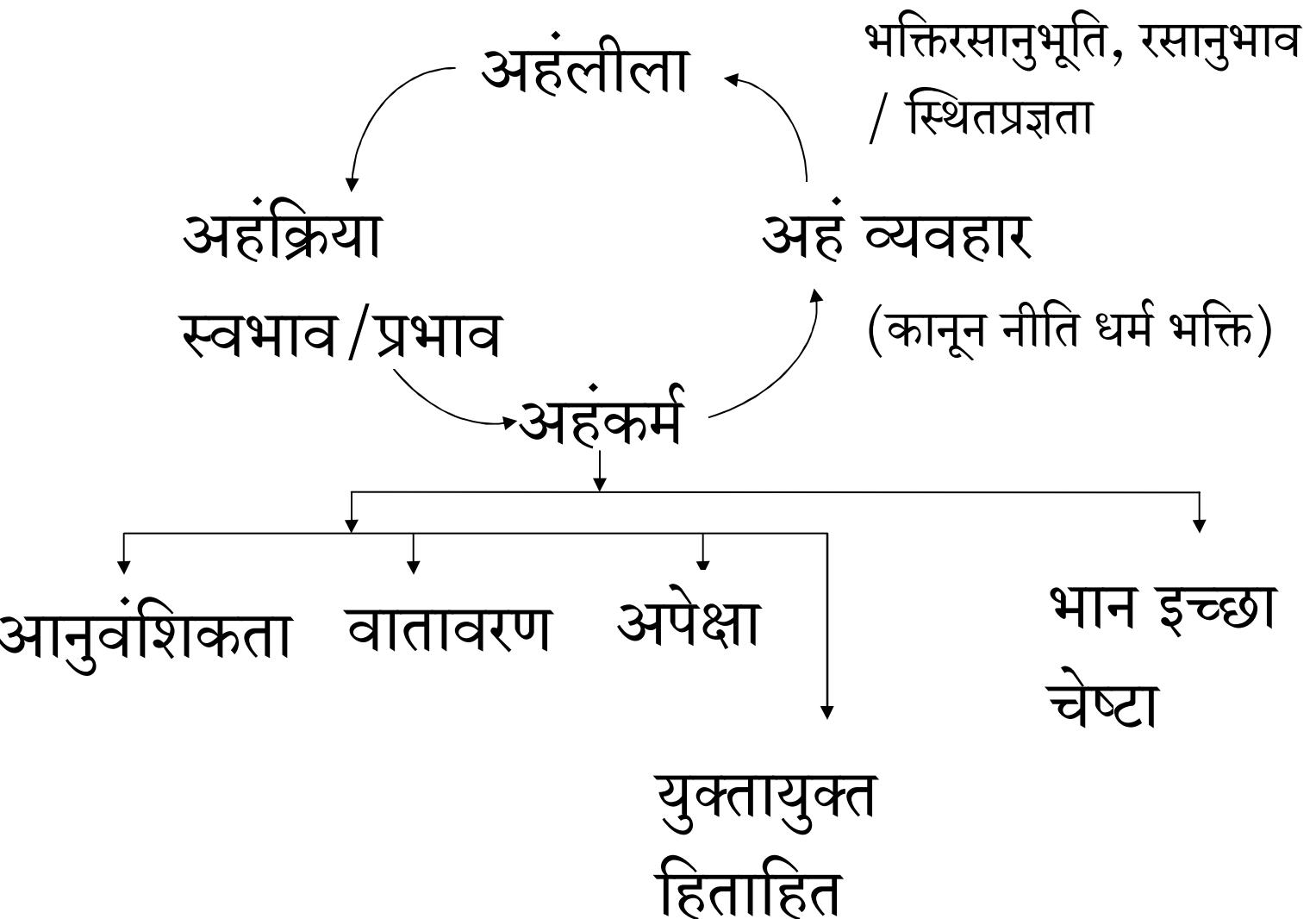
कुत्र अहम्?

परिवारीकस्नेह  
अपरिचित सुरक्षा

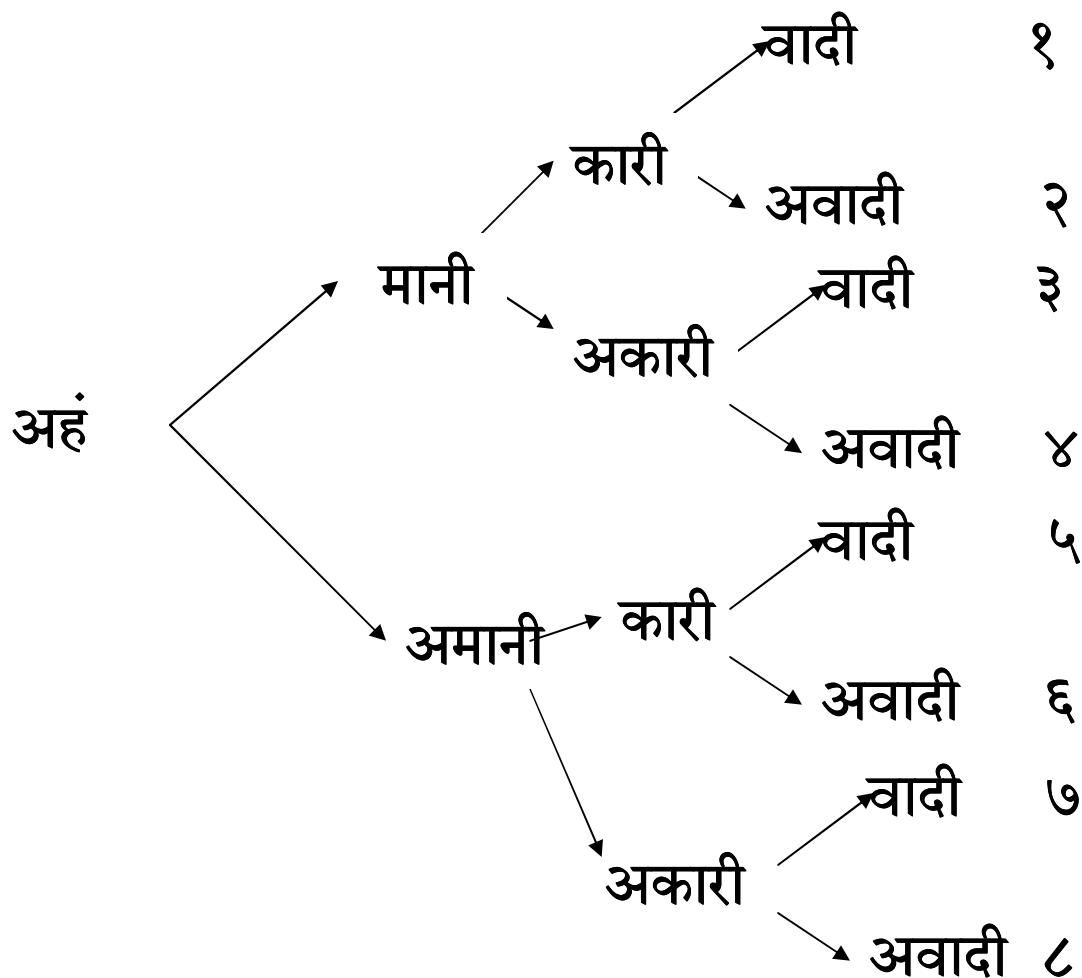
को अहम्?

आहारनिद्रादि  
संतोषान्वेषी





- १) जीवोहं = तव अंशो अहम् (ब्रह्मसंबन्ध)
- २) तदीयोहं= आत्मनिवेदन (ममता+आत्मरतिसंबन्ध)
- ३) त्वद्दासोहं= भगवते कृष्णाय स्वीयसमर्पणम्  
(भजनीयसंबन्ध)
- ४) त्वत्सेवकोहं=स्वीयविनियोगी अहं (सेव्यसंबन्ध)



## अहं विक्रिया

	लक्षण	उदाहरण	उपाय
१) डिनायल ऑफ रियालिटी			
२) फेन्टेसी			
३) रिप्रेशन			
४) रेशनलाईजेशन			
५) प्रोजेक्शन			
६) रिएक्शन फॉर्मेशन			
७) डिस्प्लेसमेंट			
८) अनडुइंग			
९) आइडेंटिफिकेशन			
१०) इन्ट्रोजेक्शन			
११) कम्पेंसेशन			
१२) एकिटंग आउट			